Nature and importance of Museum in India

भारत में संग्रहालयों के स्वरूप एवं महत्व

Navin Kumar
Professor
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G. / M.A. thIV **Semester,**

Dept. of A.I.H. & Archaeology. Patna University

Paper- Museology (E.C.)

भारत में प्राचीन स्मारकों की भरमार है। विशाल एवं सुन्दर मंदिर, जिनकी कारीगरी एवं जिनपर उत्कीर्ण मूर्तियॉ अद्‌भूत है, भरे पड़े हैं। इसी प्रकार स्तूप एवं उनके चारों ओर लगी वेदिका एवं तोरण भारतीय कला के अनुपम धरोहर हैं। परन्तु इसके बावजूद संग्रहालयों का महत्व कम नहीं होता चूकिं यही वे वह स्थान हैं जहॉ हमें कला एवं वास्तुकला के क्षेत्र में 5000 वर्षों की भारतीय उपलब्धियों का ज्ञान प्राप्त होता है।

यह उल्लेखनीय है कि भारत की स्वतंत्रता के पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों ने भारतीय कला के महत्व को समझा है और वे उसे अपनी ऑखों से देखने के लिए अधिक से अधिक संख्या में भारत आ रहे हैं अर्थात भारतीय संग्रहालयों का महत्व बढ़ा है स्वयं भारत में भी इनके प्रति आर्कषण एवं जागरूकता बढ़ी है।

अगर हम संग्रहालयों के इतिहास पर एक नजर डालें तो सोलहवीं शताब्दी के अन्त एवं सतरहवी शताब्दी के प्रारंभ में विभिन्न लोगों तथा धार्मिक संस्थानों ने तथा नगर सभाओं ने पश्चिमी देशों में कलात्मक तथा अन्य विचित्र एवं अद्‌भूत वस्तुओं का संकलन प्रारंभ किया। इन संग्रहों में पुस्तकें, चित्रकारी, मूतियॉ, सिक्के, शस्त्र, आभूषण, बहुमूल्य रत्न आदि सम्मिलित थे। बाद में इन संग्रहकर्ताओं ने इन वस्तुओं के महत्व के आकलन

की आवश्यकता समझी। इन्होंने या तो स्वयं इसमें रूचि लेनी प्रारंभ की अथवा इस कार्य के लिए योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया। परन्तु अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी के प्रांरभ में एक नए आदर्श का विकास हुआ। निजी संग्रहकर्ताओं ने इनका प्रदर्शन प्रारंभ किया। कतिपय लोगों ने उन्हें विश्वविद्यालयों एवं विद्वानों की संस्थाओं को दान में दे दिया। फलस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण संग्रहालयों की स्थापना हुई, जैसे ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन (1759), 1793 में पेरिस का लुब्रु संग्रहालय और 1814 में कलकत्ता का भारतीय संग्रहालय। द्वितीय विश्वयुद्व के बाद इस दिशा में नयी क्रान्ति आई। संग्रहालयों का महत्व लोगों ने समझा। इनका शैक्षणिक महत्व समझा गया। अपने देश के इतिहास एवं संस्कृति को समझने का संग्रहालय अच्छा माध्यम है।

भारत में संग्रहालयों को तीन वर्गों में बॉटा जा सकता है– (1) राष्ट्रीय महत्व के संग्रहालय (2) राज्य स्तर के संग्रहालय तथा नगरों के संग्रहालय एवं (3) स्थानीय संग्रहालय तथा उत्खनित स्थल के संग्रहालय।

भारत में तीन राष्ट्रीय स्तर के संग्रहालय हैं– (1) नेशनल म्युजियम, नई दिल्ली (2) इंडियन म्युजियम, कलकत्ता (3) सालारजंग म्युजियम, हैदराबाद। ये संग्रहालय मुख्यतः भारत सरकार की वित्तीय सहायता पर चलते हैं इसलिए इनका स्वरूप अखिल भारतीय है और इसमें देश के सभी भागों की वस्तुऍ समर्पित है। कलकत्ता का इंडियन म्युजियम इनमें सबसे पुराना है। इसमें हड़प्पा काल से आधुनिक काल की वस्तुऍ हैं। 500 ई0 पूर्व से 1700 ई0 पूर्व के बीच की मूतियॉ, चित्रकला, सिक्कों, कपड़ों आदि का अनुपम संग्रह है। इस संग्रहालय में नृतत्व, जीव विज्ञान तथा वनस्पति विज्ञान की विभागें भी है। इस संग्रहालय की गणना विश्व की 15 प्रमुख संग्रहालयों में की जाती है। सालारजंग म्युजियम में पश्चिमी देशों का अनुपम संग्रह है। संसार की अनोखी वस्तुओं का संग्रह हैदराबाद के निजामों ने किया है। नई

दिल्ली के नेशनल म्युजियम की स्थापना आजादी बाद हुई। 1949 ई0 में भारतीय संग्रहालयों में एकत्रित किया हुआ भारत की कलात्मक वस्तुओं की प्रदर्शनी जब लंदन से वापस आई तो पहले उसे राष्ट्रपति भवन में लोगों की सुविधा के लिए रखा गया। पश्चात पंडित जवाहर लाल नेहरू के व्यक्तिगत रूचि के फलस्वरूप 1960 ई0 में जनपथ पर इसके भवन का निर्माण हुआ। इसमें भारतीय कांस्य मूर्तियॉ, प्रस्तर मूर्तियॉ, प्रागैतिहासिक उपकरण, सिक्के, शस्त्र आदि के अतिरिक्त विदेशी कला के भी नमूने प्रदर्शित हैं।

राजकीय महत्व के संग्रहालय तथा नगर संग्रहालय के अन्तर्गत मथुरा, इलाहाबाद तथा बनारस के संग्रहालयों का उल्लेख किया जा सकता है। ये स्थान शैलानियों के लिए विशेष आकर्षण के केन्द्र है। मथुरा संग्रहालय कुषाण कला के संग्रह के लिए प्रसिद्व है। इलाहाबाद संग्रहालय में मूतियॉ,, चित्रकारी तथा गंगा, यमुना दोआव की मृणमूर्तियों का अनुपम संग्रह है। इलाहाबाद में स्थित आनन्द भवन में जवाहर लाल नेहरू के व्यक्तिगत व्यवहार की वस्तुऍ रखी है परन्तु आजादी के इतिहास का यह संग्रहालय हमें ज्ञान देता है। वाराणसी का भारत कला भवन में श्री रामकृष्णदास द्वारा संकलित कलात्मक वस्तुऍ है जिसमें प्राचीन एवं मध्यकालीन कपड़े, अलंकरण कला के नमूने, चित्रकारी आदि मुख्य हैं।

मुंबई का प्रिंस ऑफ वेल्स म्युजियम में राष्ट्रीय संग्रहालयों की तरह देश के विभिन्न भागों के कला के नमूने है साथ ही पश्चिमी कला के भी नमूने है। इस संग्रहालय को जे0 खण्डेलवाल तथा डा0 मोतीचन्द्र ने संवारा सजाया है।

चेन्नई का राजकीय संग्रहालय दक्षिण भारतीय प्रस्तर तथा कॉस्य मूर्तियों, सिक्कों, प्रागैतिहासिक वस्तुओं के संग्रह में लगभग अद्वितीय है। इसमें संगृहीत वस्तुओं में अमरावती स्तूप की मूर्तियॉ उल्लेखनीय हैं। इसी संग्रहालय

से सटा आर्ट गैलरी है जिसमें राम, लक्ष्मण तथा सीता की विख्यात कॉस्य मूतियॉ है। इसमें दक्षिण भारतीय चित्रकारी भी है।

लगभग सभी राज्यों में एक से अधिक अच्छे संग्रहालय है। भूवनेश्वर, पटना, लखनऊ, चण्डीगढ़, बड़ौदा, नागपुर, बंगलौर, त्रिवेन्द्रम, भोपाल, गोहाटी आदि की राजकीय संग्रहालय के संग्रह काफी अच्छे है।

अनेक ऐसे संग्रहालय है जो प्रांरभ में ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं को रखने के लिए शेड के रूप में बनाए गए थे और जो धीरे धीरे छोटे संग्रहालयों के रूप में विकसित हुए। इनमें रखी वस्तुएॅ उसी क्षेत्र से संबंधित होती है। इसके अतिरिक्त उत्खनित स्थानों पर निर्मित संग्रहालय है जो उन उत्खननों से प्राप्त वस्तुओं को रखने के लिए बनाए गए। इस तरह के संग्रहालयों में श्री रंगपटनम का टीपू सुल्तान संग्रहालय, जयपुर का सिटी पैलेस म्युजियम, नागार्जुनीकोण्डा, नालन्दा, सॉंची, सारनाथ, बोधगया, खजुराहो, हम्पी, हेलेबिड का पुरातात्विक संग्रहालय तथा मद्रास का फोर्ट सेन्ट जार्ज म्युजियम की गणना की जा सकती है। दिल्ली का लालकिला संग्रहालय भी इसी प्रकार का संग्रहालय है। यूनेस्को कमिटि ने गुजरात के लोथल और राजस्थान के कालीवंगा में संग्रहालयों की स्थापना का सुझाव दिया है, जिसके परिणाम स्वरुप वहॉं संग्रहालय निर्मित किये गये ।

1954 ई0 में स्थापित नेशनल आर्ट गैलरी आफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली में 2500 से अधिक लगभग 100 वर्षों के बीच विकसित कला शैलियों के नमूने हैं। रविन्द्रनाथ टैगोर, नन्दलाल बोस, अवनिन्द्रनाथ टैगोर, रवि वर्मा, गनेन्द्र नाथ टैगोर, जामिनी राय, डी0 पी0 रायचौधरी, अमृता शेरगिल, सुधीर खस्तागीर, एन0 एस0 बेन्द्रे, मोहन सामन्त, एम0 एफ0हुसैन , सतीश गुजराल, अकबर पदमसी तथा जे0 स्वामीनाथन की कलाकृतियॉ यहॉ प्रदर्शित है।

कुछ विशेष प्रकार के संग्रहालय भी हैं। नई दिल्ली का क्रैक्टस म्युजियम 1956–57 में स्थापित हुआ। आल इंडिया हैण्डीक्राफ्टस बोर्ड द्वारा संग्रहित बहुमूल्य संग्रह को प्रदर्शित किया गया। इसमें खिलौने, गुड़ियॉ, चित्रकारी तथा कपड़े प्रस्तर तथा हाथी दॉत की सामग्री, काष्ट तथा धातु की वस्तुऍ, मिट्टी के सामान तथा रत्नादि का संग्रह है। विविध प्रकार के कपड़ों का संग्रह इस संग्रहालय की विशेषता है। भारत के विभिन्न भागों की विशेषताओं का संकलन है जैसे बनारस की जड़ीदार साड़ी, गुजरात का पटोला, पंजाब की फुलकरी आदि का अनुपम संग्रह यहॉ प्रदर्शित मिलता है।

शांतिनिकेतन के रवीन्द्र सदन में मूल रूप से रविन्द्र नाथ टैगोर के जीवन एवं कार्यों से संबंधित वस्तुओं का संग्रह करना है। नई दिल्ली के तीन मूर्ति भवन में स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू के व्यवहार की वस्तुऍ उसी प्रकार रखी गई है जैसा कि उनके प्रधानमंत्री के काल में रहा करती थी। पंडित जी इसी मकान में रहते थे जिसे उनकी मृत्यु के बाद उनका स्मारक बना दिया गया।

बिरला इंडस्ट्रियल तथा टेक्निकल म्युजियम की स्थापना कलकत्ता में ने मई 1959 में हुई। इसका उद्वेश्य है विज्ञान एवं तकनीक का मूल्यांकन करना, मानव कल्याण के लिए तकनीक की देन का मूल्यांकन करना एवं उद्योग में तकनीक के आधुनिक तरीकों का उपयोग का मूल्यांकन करना। इस संग्रहालय की गैलरियाँ इस प्रकार है– लोहा एवं इस्पात, ताँम्बा, पेट्रोलियम, लोकप्रिय विज्ञान, न्यूकिलयर भौतिकी, मोटिव पॉवर, विद्युत, टेलीविजन तथा इलेक्ट्रोनिक्स, कौम्युनिकेशन एवं माइनिंग। आजकल विज्ञान संग्रहालय जनशिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम माना जाता है। इसमें प्रदर्शित बहुत सी चीजों को दर्शक स्वयं संचालित करते हैं।

अंत में बिहार के संग्रहालयों की चर्चा करना अनुचित न होगा। पटना संग्रहालय देश के राष्ट्रीय स्तर के संग्रहालयों को छोड़कर अन्य संग्रहालयों से कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसमें संकलित प्रस्तर एवं मिट्टी की मूतियॉ तथा कॉसे की मूर्तियॉ अपना विशेष महत्व रखता है। मौर्यकालीन दीदारगंज यक्षी इस संग्रहालय का विशेष आकर्षण है। जब भी देश के बाहर कोई भी कला प्रदर्शनी भेजी जाती है पटना संग्रहालय की यह मूर्ति **अवश्य** जाती है। इस संग्रहालय में सिक्कों का भी अच्छा संकलन है। बोधगया तथा नालन्दा के पुरातात्विक संग्रहालयों में वहॉ के उत्खनन से प्राप्त मूर्तियॉ तथा पुरातात्विक महत्व की अन्य सामग्रियों का संकलन है। दरभंगा का राजकीय चन्द्रधारी संग्रहालय, एक व्यक्ति द्वारा संकलित सामग्रियों के अनुदान पर बना है। बाद में और भी सामग्रियॉ इसमें रखी गई। **वर्तमान समय मे** रॉची, भागलपुर, बिहारशरीफ, गया, हाजीपुर आदि में भी राजकीय संग्रहालयों की स्थापना हुई।